International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(6): 149-153

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(6): 149-153
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 24-08-2020
Accepted: 30-10-2020

डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री
पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी,
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
एस0 जी0 एन0 डी0 खालसा
कॉलेज, देव नगर, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

Corresponding Author:
डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री
पूर्व सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी,
एसोसिएट प्रोफेसर संस्कृत विभाग,
एस0 जी0 एन0 डी0 खालसा
कॉलेज, देव नगर, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

वैदिक सोम – एक विवेचन

डॉ0 धमेन्द्र कुमार शास्त्री

प्रस्तावना

सोम ऐसा वैदिक शब्द है, जिसका ठीक अर्थ न समझने से वेद का अर्थ समझना कठिन है। वैदिक देवताओं में सोम एक प्रमुख देवता है। वेदार्थ को समझने में देवताओं का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है। सोम के वास्तविक स्वरूप को समझकर ही वेदमन्त्रों का तात्पर्यार्थ ठीक तरह से समझा जा सकता है। ऋग्वेद का नवम मण्डल सोम देवता का है। सामवेद के पावमान पर्व या काण्ड में कुल 119 मन्त्र है और सभी का देवता पवमान सोम है। पवमान देवता होने से ही इसका नाम 'पावमान' रखा गया है। पवमान सोम पवित्रता, समस्वरता, शान्ति एवं आनन्द का प्रतीक है। केवल कल्पना कर लेने मात्र से सोम को सुरा मान लेने से वेदार्थ करना सम्भव नहीं है।

सोम शब्द का प्रचलित अर्थ सोम ओषधि अथवा चन्द्रमा है। 'सोम' शब्द निचोड़ने अर्थवाली षुञ्–अभिषवे धातु से निष्पन्न होता है। ओषधि को सोम इस कारण कहते है, क्योकि इसे निचोड़कर उसका रस निकाला जाता है। ओषधिवाचक सोम शब्द प्रधान देवता रूप से वेदों में बहुत कम प्रयुक्त हुआ है। ऋग्वेद में यद्यपि सोम देवता वाली या पवमान सोम देवता वाली हजार से भी अधिक ऋचाएँ हैं, तथापि निरूक्तकार की दृष्टि से वे प्रायः सोम ओषधिपरक या चन्द्रमापरक नहीं है।

उणादिकोष में 'सु' अर्त्तिस्तु... मन्। [1] सूत्र द्वारा मन् प्रत्यय करके सोम शब्द सिद्ध किया गया है।

इस सूत्र में पठित सु धातु 'षू–प्रसवैश्वर्ययोः' भ्वादि तथा अदादि और पुञ् अभिषवे स्वादि, ग्रहण की जा सकती है। तदनुसार जो उत्पन्न करता है, जो ऐश्वर्य का हेतु होता है या जो निचोड़ा जाता है, वह सोम है। यद्यपि उणादि सूत्र में 'सु' धातु ही पठित है तो भी 'षू प्रेरणे' तुदादि तथा षूङ् प्राणिगर्भ विमोचने अदादि धातुओं से भी, मन प्रत्यय करके सोम शब्द की सिद्धि की जाती है।

इन धातुओं के आधार पर विभिन्न विद्वानों ने सोम शब्द के अनेक अर्थ प्रस्तुत किये हैं। महर्षि दयानन्द ने अपने वेदभाष्य में सोम शब्द के विभिन्न अर्थ दर्शाये हैं–

1. सुवति चराचरं जगद् यः स जगदीश्वरः – जो चराचर जगत् को उत्पन्न करता है वह जगदीश्वर
2. सूयन्ते रसा यस्मात् स सोमौषधिराजः [1] – जिससे रस निकाल जाते है, वह ओषधि राज सोम।
3. सोमविद्यासम्पादको विद्वान् [2] – सोमविद्या का सम्पादक विद्वान।
4. शुभकर्मगुणेषु प्रेरकः परमेश्वरो विद्वान् वा [3] – शुभकर्मों एवं गुणों में प्रेरक परमेश्वर या विद्वान्।
5. सकलैश्वर्यपठितः सौम्यगुणसम्पनः राजा [4] – सकल ऐश्वर्यों से समृद्ध सौम्यगुणसम्पन्न राजा।
6. बहुसुखप्रसावकः वायुः [5] – बहुत सुख का उत्पादक वायु।
7. चन्द्रः [3] – चन्द्रमा
8. सेनाप्रेरकः सेनाध्यक्षः [6] – सेनाप्रेरक सेनाध्यक्ष।
9. सौम्यगुणसम्पन्नः सभ्यो जनः [7] – सौमयगुण–सम्पन्न सभ्यजन।

उपर्युक्त विभिन्नार्थ स्वामी दयानन्द ने प्रकरणशः दर्शाये हैं।

सामवेद के पावमान काण्ड में पारमार्थिक दृष्टि से सोम शब्द का मुख्यार्थ परमात्मा है। सर्वोत्पादक परमात्मा ने ही ब्रह्माण्ड के सूर्य, चन्द्र, वायु, विद्युत् आदि और शरीर पिण्ड के प्राण, बुद्धि, वाक्, चक्षु, श्रोत्र आदि रचे हैं, क्योकि उनकी रचना करना किसी मनुष्य के समार्थ्य में नहीं है –

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृषिव्याः। [8]

परमात्मा के पास से धारा रूप में प्रवाहित होता हुआ ब्रह्मनन्द रस भी सोम कहलाता है। योगी श्री अरविंद की व्याख्यानुसार दिव्य आनन्द (Divine Beatitude) ही सोम है। परमात्मा के पास से अभिषुत

ज्ञान और कर्म के रस की आनन्द रस की धारा से तृप्त हुआ वह आत्मा दुःख, विघ्न, विपत्ति आदि के सागर को पार कर लेता है –

तरत् स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धस।
तरत् स मन्दी धावति।। [9]
सोम का चन्द्र अर्थ के आलोक में –

'यच्छुष्कम् तदाग्नेयम् यदार्द्रम् तत् सोम्यम्' [10] – जो शुष्क है, वह आग्नेय है और जो आर्द्र है, वह सोम्य है, इस वचन की संगति लग जाती है, क्योकि चन्द्रमा की आर्द्रता शीतलता, रसवत्ता प्रत्यक्ष है।
अतः अधिदेव में यह सोम जलों का वह सुक्ष्मतम भाग है, जो सूर्य किरणों द्वारा सूर्य तक पहुँचता है या चन्द्रप्रभा द्वारा औषधियों में पहुँचता है – अप्सु में सोमो अव्रवीदन्तर्विश्वानि भेषजा। [11]
सोम का अर्थ वेदवेत्ता, सत्यनिष्ठ नीरक्षीर विवेकी विद्वान् भी होता है –

सोमोऽस्माकं ब्राह्मणानां राजा। [12]
सोमं मन्यते पपिवान् ..... कश्चन। [13]

वस्तुतः उस सोम को वेदवत्ता विद्वान् जानते हैं, उसे कोई (स्थूल बुद्धि) मनुष्य नहीं पा सकता।
अध्यात्म में सोम दिव्य आनन्द का प्रतीक है। श्री अरविन्द कहते है। सोमरस उस आनन्द की सत्ता के दिव्य आनन्द का प्रतिनिधि है जो ऋत या सत्य के बीच में से होकर अतिमानस चेतना से मन में प्रवाहित होता है। [14]
वैदिक–साहित्य में सोम का ओषधियों के साथ विशेष सम्बन्ध बताया गया है। उदाहरण के लिए –

1. सौम्या ओषधयः [15]
2. सोम ओषधीनामधिराजः [16]
3. सोमो वै राजौषधीनाम् [17]
4. ओषधो हि सोमो राजा [18]
5. या ओषधीः सोमराज्ञीः [19]
6. ओषधयः संवदन्ते सोमेन सहराज्ञा [20]

वेद में देवों का भाग जल, औषधियों का रस घृत और सोम है –

देवानां भाग उपनाह एष.....शरीरम्। [21]

यजुर्वेद 19 तथा 20 अध्ययों में सोम को शुक्र, रेतः और इन्द्रिय कहा है। आयुर्वेद में अग्नि और सोम शब्द का प्रयोग रजः तथा वीर्य के लिए हुआ है। यथा सौम्यं शुक्रमार्त्रवमाग्नेयम्। अर्थात 'शुक्र' सोम है तथा ऋतुधर्म अग्नि है।

शुक्रं च्युतं योनिमभिप्रतिपद्यते संसृज्यते चार्तवेन।
ततोऽग्नि सोमसंयोगात् संसृज्यमानो गर्भाशयमनुप्रतिपद्यते क्षेत्रज्ञः। [22]

शुक्र वीर्य पुरूष से च्युत होकर योनि में आता है और ऋतुधर्म रजः के साथ मिलता है तब अग्नि और सोम के संयोग के साथ मिलकर जीवात्मा गर्भाशय को प्राप्त होता है –
ब्राह्मण ग्रन्थी में सोम शब्द का अर्थ वीर्य भी किया है। यथा – रेतः सोमः [23] इस शक्ति का शरीर में क्या प्रभाव होता है इसका दिग्दर्शन मन्त्र में प्राप्त होता है।
सोमेनादित्या बलिनः सोमेन पृथिवी मही। [24] सोम की वीर्य शक्ति द्वारा आदित्य ब्रह्मचारी बलवान् होते हैं। वीर्य द्वारा स्त्री शक्ति भी पूजनीया होती है।

सोम का अर्थ न्यायाधीश है। ऋग्वेद और अथर्ववेद के सूक्तों में इन्द्र और सोम से राक्षसों अर्थात् प्रजापीड़क दुष्कर्मा लोगों को दण्डित करके प्रजाजनों की रक्षा की प्रार्थना है। सोम ही यह निश्चय करता है कि किस अपराधी को क्या दण्ड मिलना चाहिए। सोम से अपराध और दण्ड का निर्णय हो जाने के पश्चात् अपराधी सम्राट् (इन्द्र) के बन्धन में पड़ जाते हैं। मन्त्रों के वर्णन से स्पष्ट पता चलता है कि न्याय का (Judicial) काम सोम का है और शासक का काम इन्द्र का है। इन मन्त्रों में यह भावना दर्शायी गयी है –

सुविज्ञानं चिकितुषे जनाय.....। [25]
ये पाकशंसं विहरन्त। [26]
न वा उ सोमो वृजिनं हिनोति। [27]

उपरोक्त सूक्त पच्चीस–पच्चीस मंन्त्रों के लम्बे सूक्त है। इनके अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि सत्यासत्यता का निर्णय करने का काम सोम को सौंपा गया है, तथा इन्द्र का काम केवल दण्ड प्रदान करना मात्र है।
वेदों में सोम शब्द का प्रयोग परमात्मापरक अर्थ में सबसे अधिक प्रयुक्त हुआ है। कुद मन्त्र प्रस्तुत है –

सोमः पवते जनिता मतीनां.....[28]

सोम पवित्र करता है द्युलोक, पृथिवीलोक का उत्पन्न करने वाला है।

पवित्र ते विततं ब्रह्मणस्पते.....[29]।

ते सोम ब्रह्म अर्थात् वेद का स्वामी है।
सोम रूद्रं हुवेम [30] सोमम् शीलता और शान्ति के भण्डार सौम्यस्वरूप भगवान् को अपनी रक्षार्थ पुकारते हैं।
सोम रारन्धि नो[31]..... हे सोम! अर्थात् हे सुख–शान्ति के स्त्रोत प्रभो !

स्वादिष्ठया महिष्ठया पवस्व सोम धारया। [32]

यही वह स्वादिष्ट, आनन्दप्रद सोमधारा है, जिसे पीकर आत्मा तृप्त होता है।
मानव जीवन की सार्थकता सोमपान से ही सम्भव है '

अपाम सोमम् अमृता अभूम.....। [33]

हमने सोमपान कर लिया है, हम अमृतमय हो गए हैं। सोम के पान से तात्पर्य यहाँ ब्रह्मानन्द के सरस रस के पान से है और अमृतमय से तात्पर्य है, निर्विघ्न आनन्दमय पद। हमने ज्योति प्राप्त कर ली है, हमने दिव्यताएँ प्राप्त कर जी है।
जो परमात्मा के सोम रस का पान कर लेता है, वह अमरत्व को प्राप्त हो जाता है –

इन्द्रायं पवते मदः सोमो मरूत्वते सुतः। [34]
उपनिषदों में भी सोम की चर्चा की गई है –
वह परमात्मा सोम अर्थात् शान्ति स्वरूप और शान्तिदायक है,

जगत् का स्त्रष्टा है। समाधि अवस्था में हृदय में उसी का मन्थन चिन्तन किया जाता है। सोमों यत्रातिरिच्यते तत्र संजायत मनः। [35]
पं0 शिवशंकर ने आध्यात्मिक शैली में सोम का अर्थ जीव भी किया है – यद्यपि सोम इति जलस्य संज्ञा तथापि तज्जल.....संसर्गात् सैव संज्ञा जीवस्यापि भवति। [36]

मुण्डकोपनिषत में सृष्टि के पदार्थो की उत्पत्ति बतलाते हुए सोम शब्द के द्वारा चन्द्रमा की उत्पत्ति का वर्णन किया गया है –

सोमो यत्र पवते यत्र सूर्यः। [37]

संसार के दिव्य पदार्थ, जिस कारण रूप ऊर्जा शक्ति को प्राप्त करके अस्तित्ववान रहते है।, वही ऊर्जा शक्ति सोम है, जिसे बृहदारण्यक ने बीजतत्व कहा है।– ''एष सोमो राजा तदे्दवानामन्न तं देवा भक्षयन्ति। [38]

बृहदारण्यक में शुक्लता गुण के आधार पर चन्द्रमा को सोमसंज्ञा से वर्णित किया है। [39]

सृष्टि की उत्पत्ति के सम्बन्ध में सोम शब्द का प्रयोग कई स्थानों पर मिलता है। यह एक वैज्ञानिक तथ्य है कि प्रकाश और आर्द्रता में जीवाणुओं की उत्पत्ति होती है, बृहदारण्यक में इसी उत्पत्तिमूलक आर्द्रता को सोम कहा है। [40] जैसे यज्ञ में डाली हुई आहुतियों से बादल बनते है। बादल से पुनः वर्षा होती है। इसी जलीय वाष्प को 'सोम' शब्द के द्वारा उल्लिखित किया है।[41] इस प्रकार उपषित् साहित्य में भी सोम का स्वरूप प्रयोग होते हुए अनेक महत्त्वपूर्ण अर्थो की अभिव्यक्ति इसके द्वारा की गई है।

इस प्रकार हम देखते है कि वैदिक–साहित्य में सोम के विभिन्न अर्थ है। केवल मात्र ओषधिवाचक, सोमलता नशीली होती थी। ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में मदिन्तमः मद्यः, मदच्युत, मधुमन्तमः, देवमादनः आदि विशेषण सोम के लिए प्रयुक्त हुए है।। वेदभाष्यकार सायण ने सोम को मादक मानकर ही मन्त्रों की व्याख्या की है, इसलिए लोगों को सोम के प्रति यह भ्रान्ति हुई कि वह मदिरा की भाँति नशीला पदार्थ है। किन्तु शतपथ में इनका निराकरण करते हुए दोनों को पृथक् माना है। यहाँ शतपथ में सोम को सत्य श्री तथा ज्योतिस्वरूप कहा गया है, जबकि सुरा को 'अनृत पाप्मा' तथा तमः स्वरूपा बताया है। [42]

ऋग्वेद के अनेक मन्त्रों में सोम के लिए ऐसे विशेषणों का प्रयोग हुआ है, जो पवित्रता के द्योतक है शुचिजातः [43], शुचि [44], पुनान [45] आदि। वस्तुतः सोम को ओषधिवाचक यदि हम मानते हैं तो वह सोम सात्त्विक गुणोपेता एक वनस्पति थी, जिसका रस पीनेवाले को शक्ति स्फूर्त्ति, दीप्ति तथा प्रफुल्लता प्रदान करती है। सोम से विपरीत सुरा मनुष्यों की तामसी प्रवृत्तियों को जागृत करती है तथा उन्हें परस्पर लड़ाती है। यही बात ऋग्वेद में इस प्रकार कही गई है ' युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। [46]

तथापि यह स्वीकार करना होगा कि सोम का प्रयोग वैदिक–साहित्य में केवल किसी औषधियाँ की तला के अर्थ में ही नहीं हुआ है, अपितु विवेचयमान लेख में जो विभिन्नार्थ आये है।, उन विभिन्नाथों की प्रकरणवशः संगति वैदिक–वाड्मय में लगायी जानी चाहिए तभी हम वेदार्थ के साथ न्याय कर पायेगें अन्यथा वह केल हास्यापद बात बनकर रह जायेगी। इसलिए समग्रता में वैदिक–साहित्य आलोडन–विलोडन कर नवतीन को निकाला जा सकता है।

सारांश में वैदिक साहित्य में समागत सोम शब्द के विभिन्न अर्थो का प्रतिपादन कर लेख को समाप्त करते हैं।

सोम के विभिन्न अर्थ

1. ओषधिः सोमः सुनोतेर्यदेनमभिषुण्वन्ति।। नि0 11.2
2. सत्यं श्रीर्ज्योतिः सोमः।। श0 5.1.2.10
3. सोमो राजा चन्द्रमाः।। श0 10.4.2.1
   असौ वै सोमो राजा विचक्षणश्चन्द्रमाः।।
   – कौषीतकि ब्रा0 4.4
   तस्मात् सोमो राजा सर्वाणि नक्षत्राण्युपैति।।
   – षड्विंश ब्रा0 3.12
4. सोमो राजा राजपतिः।। – तै0 2.5.7.3
5. वृत्रो वै सोम आसीत्।। – श0 3.4.3.13
6. पितृलोकः सोमः।।
   – कौ0 16.5। श0 2.3.2.12। तै0 1.6.9.2
7. संवत्सरो वै सोमो राजा।।
   – कौशीतकि ब्रा0 7.10
8. सोमो वै पवमानः।।
   – श0 2.2.3.22
   एष वै सोमस्योद्गीथौ यत्पवते।।
   – ताण्डय0 6.6.18
9. सोमो वा इन्द्रः।।
   –श0 2.2.3.23
10. सोमो रात्रिः।।
    –श0 3.4.4.15
11. सोमो वै पर्णः।।
    –श0 6.4.1.1
    सोमो वै पलाशः।।
    – कौ0 2.2
12. पशुर्वै प्रत्यक्षं सोमः।।
    – श0 5.1.3.7
    सोम एवैष प्रत्यक्षं यत्पशुः।।
    – कौ0 12.6
    पशवः सोमो राजा।।
    – तै0 1.4.7.6
13. सोमो वै दधि।।
    – तै0 1.4.76
14. सोमः पयः।।
    – श0 12.7.3.13
15. एष वै यजमानो यत् सोमः।। – तै0 1. 3.3.5
16. क्षत्रं सोमः।। – ऐ0 2. 38
17. यशो वै सोमः। – श0 4.2.4.9
    यशो वै सोमो राजा।।
    – ऐ0 1.13
    यशो वै सोमो राजान्नाद्यम्।।
    – कौ0 6.6
18. अन्नं सोमः।।
    – कौ0 9.6
    एतद्वै देवानां परमन्नाद्यं यत् सोमः।।
    – कौ0 13.7
    एतद्वै देवानां परमन्नं यत्सोमः।।
    – तै0 1.3.3.2
19. प्राणः सोमः।।
    – श0 7.3.1.2
20. रेतः सोमः।।
    – कौ0 13.7
    सोमो वै वृष्णो अश्वस्य रेतः।।
    – तै0 3.9.44
21. रसः सोमः।।
    – श0 7.3.1.1
22. आपः सोमः सुतः।।
    – श0 7.1.1.22
23. तद्यत्तदमृतं सोमः सः।।
    – श0 9.5.1.8
24. सोमो वै प्रजापतिः।।
    – श0 5.1.3.7
25. परोक्षमिव ह वा एष सोमो राजा यन्नयग्रोधः।।
    –ऐ0 7.31

महर्षि दयानन्द ने ब्राह्मणादि ग्रन्थों तथा अपनी प्रतिभा शक्ति के आधार पर प्रसंगानुसार सोम शब्द के विभिन्न अर्थ किए हैं। यथा–

1. **ऐश्वर्य सम्बन्धी**
   ऐश्वर्ययुक्त – यजु0 25.16, 26.25, ऋ0 3.51.7, 4.28.1
   ऐश्वर्यप्रापक – यजु0 6.26, 6.33, 8.26, 8.50, 19.55, ऋ0 1. 91.18, 3.3.1
   योगैश्वर्ययुक्त ऋ0 9.133.4 (संस्कार विधि, संन्यास प्रकरण)
   ऐश्वर्यकारकं वेदशास्त्रबोधम्, ऋ0 1.101.9
   योगसिद्धमैश्वर्यम्, यजु0 7.4, योगैश्वर्यवृन्दः, यजु0 7.9
2. जगदुत्पादक जगदीश्वर, सोमलतादि ओषधि यजु0 3.56। महौषधिरस ऐश्वर्यो वा ऋ0 2.14.3, 5.43.4
3. सोमविद्यासम्पादक यजु0 4.37।
4. 4.चन्द्र सम्बन्धी –
   चन्द्र इव वर्तमानः यजु0 12.112
   चन्द्रः ऋ0 3.62.14, चन्द्रलोकेन अथर्व, 14.1.2 (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)।
   चन्द्रमाः सोमलताद्योषधिगणः, अथर्व0 14.1.54 (संस्कारविधि)।
   चन्द्रेण प्रकाशमानेवाहाल्दकत्वेन, यजु0 10.30
5. सर्वजगदुत्पादक, यजु0 1.38, 5.7, 7.25

सोम का स्वरूप और औषधि की प्राप्ति

(1) आध्यात्मिक सोम –

1. ईश्वर (यजु0 3.56, आर्या0 यजु0 1.38, ऋ 1.91, यजु0 5.7, ऋ0 1.43.9 और सामवेद का पवमान पर्व आदि)।
2. ऐश्वर्य – (यजु0 19.15, 7.4, 26.23, ऋ0 5.43.5)।
3. अध्ययन – अध्यापन यज्ञ –(यजु0 7.35)
4. सुख –(ऋ0 1.22.1)
5. शरीरात्मबल –(यजु0 34.21)
6. विद्या, योगाभ्यास ओर भक्ति – (संस्कारविधि ऋ0 9.113.6)
7. सत्य, श्री, ज्योतिः – (शत0 5.1.2.10, 4.1.3.9)
8. प्राणः – (शत0 7.3.2.1)
9. सर्वम् – (श0 5.5.4.11, सर्वादेवताः 1.6.3.21)

(2) आधिभौतिक सोम –

10. विद्वान् – (यजु0 26.25, 4.37, ऋ0 1.91.16, 1.89.3)
11. राजा – (ऋ0 4.28.1, यजु0 8.50, 9.26, 9.23, 10.18, 34.21)
12. सेनापति – (ऋ0 1.91.23)
13. सभाध्यक्ष – (ऋ0 1.43.7, यजु0 6.33, 17.40)
14. वैद्य – (ऋ0 1.91.11, 2.11.11)
15. शिष्य – (यजु0 7.14)
16. ऐश्वर्ययुक्त गृहस्थ – (यजु0 8.26, 8.1)
17. संन्यासी – (सं0 विधि, ऋ0 9.113.4, 1.119.9)
18. अध्यापक – (यजु0 25.16, 34.21)
19. उपदेशक – (यजु0 25.16)
20. व्यवहार – (यजु0 20.63)

(3) आधिदैविक सोम –

21. चन्द्रमा – (यजु0 12.112, ऋ0 3.62.14, अ0 14.1.54)
22. वायु – (ऋ0 1.93.5)
23. विद्युत् – (यजु0 5.7)
24. जल – (ऋ0 5.34.3, 1.108.4)
25. संसार, उत्पन्न पदार्थ–समूह – (ऋ0 3.47.3, 2.15.3, 1.46.12) उत्पन्न जगत्। – (1.21.1, यजु0 1.33, ऋ0 1.16.3)
26. धान्य आदि ऐश्वर्य – (ऋ0 4.32.17)
27. ऐश्वर्यप्रापक अग्नि आदि पदार्थ – (यजु0 33.1)
28. विमान आदि यान – (ऋ0 1.5.2)
29. वृत्र – (शतपथ 3.4.3.13)
30. संवत्सरः – (तै0 1.6.8.2, कौ0 7.10)
31. रात्रिः – (शत0 3.4.4.24)
32. पर्ण 'ढाक का पत्ता' – (शत0 6.5.1.1, पलाशः कौ0 2.2)
33. दधि 'दही'– (तै0 1.4.7.6)
34. फलों का रस, पदार्थों का रस – (ऋ0 9.113.1)

इस प्रकार समस्त वैदिक निधि के आलोडन–विलोडन करने के पश्चात् भिन्न–भिन्न व्याख्याकारों ने 'सोम' शब्द के विभिन्नार्थ प्रस्तुत किये हैं। शब्दस्थ प्रकृति प्रल्य का विवेचन विश्लेषण करने के उपरान्त सोम शब्द परमेश्वर ओषधिवाचक विद्वान्, राजा, वायु, चन्द्रमा, सेनाध्यक्ष, सभ्यजन, सूर्य, विद्युत्, वीर्यशक्ति, न्यायाधीश, पितृलोक, इन्द्र, शनि, दधि, पय, क्षात्रशक्ति, यश, अन्न, प्राण, रस, ऐश्वर्यवाची, गृहाश्रम, रसविशेष, वैद्य, जल, विद्वान्, सेनापति, सभाध्यक्ष, शिष्य, अध्यापक, उपदेशक, यजमान, धान्यवाची इत्यादि विभिन्नार्थी का वाचक सोम शब्द होता है।

उपर्युक्त अर्थों का वाचक होने के पश्चात् उसे केवल मद्य, भांगादि मादक द्रव्यों का वाचक ही नहीं मानना चाहिए। वेदों के भाष्यकार सायण, उव्वट, महीधर आदि आचार्यो ने सोम का अर्थ सर्वत्र यही लता, रस या सुरा विशेष ही किया है।

वस्तुतः सोम एक ऐसा तत्त्व है या जीवन तत्त्व है जो सृष्टि को सुन्दर सुखमय और मृदु बनाता है, जो पदार्थों को आर्द्र, विदिष्ठ और आरोग्यवर्धक बनाता है,. इसीलिए सोम को रस कहा गया है। परमात्मा रस भी है और रसाधार थी। उपनिषत् और वेद दोनों ऐसा वर्णन करते हैं – रसौ वै सः [47]। रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः।। [48] परमात्मा रस से परिपूर्ण है, उसमें कोई न्यूनता नहीं है। परमात्मा ही शक्ति का स्त्रोत है, वही ज्ञानवान् प्राणों का भी प्राण और अत्यन्त सुस्वादु है। इसी प्राप्त कर अमृत अर्थात् मोक्ष प्राप्त होता है – अपाम सोयम् अमृता अभूम्। [49] हम सोम का पान करे और अमर हो जीवे। इस प्रकार सोम देवता का वर्णन लगभग 1250 वेदमन्त्रों में वर्णित है। ''सवत्यैश्वर्यहेतुर्भवतीति सोमः'' सम्पूर्ण ऐश्वर्य का हेतु सोम को कहा गया है। इस प्रकार प्रकरणशः वैदिक सोम की संगति लगायी जानी चाहिए। सोम का सब जगह केवल ओषधिवाचक अर्थ करना वेद के साथ घोर अन्याय है। प्रस्तुत लेख में सोम को ईश्वरवाची, जीवात्मावाची, चन्द्रमा का द्योतक, जलीय वाष्प, व्यक्तिबोधक है। इनका प्रसंगानुकूल विनियोग अत्यन्त आवश्यक है।

सन्दर्भ

1. उणादिकोष 1.140
2. यजुर्वेद 3.56
3. यजुर्वेद 4.36
4. ऋग्0 1.91.3
5. यजु0 7.21, 8.50
6. ऋग्0 1.91.5
7. ऋग्0 3.62.14
8. यजु0 17.40
9. ऋग्0 4.17.6
10. सामवेद पावमानपर्व मन्त्र सं0 527
11. सामवेद पावमानपर्व मन्त्र सं0 500
12. शतपथ 1.6.3.23
13. ऋग्0 1.23.20, अथर्व0 1.5.6
14. यजु0 10.18
15. ऋग्0 10.85.3
16. वेदरहस्य, पृष्ठ 95
17. शतपथ ब्रा0 12.1.1.2
18. गोपथ ब्रा0 1.17
19. तैत्तिरीय0 3.9.17.1
20. ऐतरेय0 3.40
21. ऋग्0 10.97
22. ऋग्0 10.97.22

23. अथर्व0 5.4.6
24. सुश्रुत संहिता, शरीरस्थान, अ0 3
25. कौ0ब्रा0 13.7, तै0ब्रा0 2.7.4.1, शतपथ ब्रा0 3.3.2
25. अथर्व0 14.1.2
26. अथर्व0 8.4.12, ऋग्0 7.104.12
27. अथर्व0 8.4.9, ऋग्0 7.104.9
28. अथर्व0 8.4.13, ऋग्0 7.104.13
29. ऋग्0 9.97.5
30. ऋग्0 9.83.1
31. ऋग्0 9.83.1
32. ऋग्0 7.41.1
33. ऋग्0 1.91.13
34. ऋग्0 9.1.1, साम0 438. 689
35. ऋग्0 8.48.3
36. सामवेद 520
37. श्वेताश्वतर0 6.2
38. छान्दोग्योपनिषत्, पृष्ठ 510 (हरयाणा सा0सं0)
40. मुण्डक0 2.1.6
41. छान्दोग्यो0 5.10.4
42. बृहदारण्यक0 2.1.3
43. बृहदारण्यक0 1.4.6
44. छान्दोग्यो0 5.4.2, बृहदा0 6.2.9
45. 5.2.10
46. ऋग्0 9.9.3
47. ऋग्0 9.74.3
48. ऋग्0 9.96.15
49. ऋग्0 9.2.12